ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)

प्रथम मुद्रण :
जनवरी – 2001

प्रतियाँ : *10,000*

प्रकाशक :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय,
आबू पर्वत (राजस्थान) – 307 501

मुद्रक :
ओमशान्ति प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान) – 307 510
%28124, 28125

आओ मेरे मीठे-प्यारे बच्चो!
मेरे समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो।

दो शब्द

परम-प्यारे अव्यक्त बापदादा ने 11 नवम्बर 2000 की अव्यक्त मुरली में सभी बच्चों को 6 मास में ''ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण'' बनने का लक्ष्य दिया है। हर एक ब्रह्मा वत्स उसी लक्ष्य को सामने रख अपनी-अपनी विधि प्रमाण तीव्रगति का पुरुषार्थ कर रहे हैं, लेकिन वह सम्पन्नता वा सम्पूर्णता क्या है, उसकी परिभाषा जो बापदादा ने अव्यक्त होने के पश्चात 69 से लेकर अपनी वाणियों में सुनाई है, उसका सार संकलन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी इसका गहराई से अध्ययन करते हुए एक-एक बात को रोज़ अभ्यास में लायेंगे तो अवश्य अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेंगे।

इसी लक्ष्य से बहुत संक्षिप्त रूप में यह छोटी पुस्तिका तैयार की गई है, जिससे बार-बार पढ़ते, अभ्यास करते अपनी जीवनमुक्त, सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति बनानी है तथा अन्तिम प्रत्यक्षता के समय को समीप लाना है। धन्यवाद।

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो

1- सम्पन्न बनना अर्थात् अपनी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंज़िल पर पहुंचना। जितना-जितना इस अन्तिम मंज़िल के नज़दीक आते जायेंगे उतना सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे बनते जायेंगे। जैसे कोई चीज़ जब बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। तो सब बन्धनों से, सब तरफ के लगावों से वृत्ति द्वारा किनारा होना अर्थात् सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनना।

2- सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचने के लिए एक ही अविनाशी सहारा याद रहे। कोई भी व्यक्ति, वैभव वा वस्तु को सहारा नहीं बनाओ। एक बाप दूसरा न कोई, यही विधि है समान और सम्पन्न बनने की।

3- सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए सिर्फ दो शब्द याद रखो - मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है, लेकिन बिन्दु के साथ-साथ सिन्धु है। बाकी विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। यही सहज विधि है - सम्पूर्णता को प्राप्त करने की।

4- सम्पन्नता सदा सन्तुष्टता का अनुभव कराती है। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होंगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नॉलेजफुल होकर देखेंगे।

5- जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनना ही सम्पन्न बनना है। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता।

6- अभी बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी बन जाओ। बापदादा अभी भी आह्वान करते हैं। अब रहे हुए थोड़े समय में सर्व बातों में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। अगर एक भी सम्बन्ध वा गुण की कमी है तो सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण मूर्त नहीं कहला सकते। बाप का गुण वा अपना आदि स्वरूप का गुण अनुभव न हो तो सम्पन्न मूर्ति कैसे कहेंगे, इसलिए सबमें सम्पूर्ण बनो।

ʊ ʊ ʊ

7- विशेष चेक करो कि संगमयुग की सर्व प्राप्तियां कर ली हैं? सर्व खज़ाने सामने रखो, सर्व सम्बन्ध सामने रखो, सर्वगुण सामने रखो, कर्त्तव्य सामने रखो और चेक करो कि सर्व बातों में अनुभवी हुए हैं? अगर कोई भी अनुभव रह गया हो तो उसी अनुभव को सम्पन्न बनाओ।

8- जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। बच्चों को यह अनुभव कराने के लिए साकार वतन में आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपनी अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। तो एक आँख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आँख में राज्य पद हो।

σ σ σ

9- सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सदा उपराम और द्रष्टा बनो। अपनी देह से भी उपराम, अपनी बुद्धि से उपराम, मेरे संस्कार हैं, इस मेरे-पन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं-पन से भी उपराम। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये।

10- आपकी लास्ट सम्पन्न स्टेज का गायन है–सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक.... महिमा में भी सबके साथ सम्पन्न व सम्पूर्ण शब्द है। यह सम्पूर्ण स्टेज भविष्य में तो प्राप्त होगी, लेकिन आत्मा में बल तो अभी से भरेगा। इसलिए अभी ही सर्वगुणों, सर्व कलाओं में सम्पन्न बनना है, यही सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है।

ॐॐॐ

11- सम्पन्नता, अचल स्थिति का अनुभव कराती है। जब सब बातों में सम्पन्न बनेंगे तब यह आंख व बुद्धि किसी तरफ नहीं डूबेगी। सदा रूहानियत में रहेंगे। अनेक व्यर्थ संकल्पों वा अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिकरों से फारिग और बाप द्वारा मिले हुए खजानों में सदा रमण करते रहेंगे। अन्य कोई संकल्प करने की फुर्सत नहीं होगी।

12- अपनी सब जिम्मेवारियों का बोझ बाप को देकर आप डबल लाइट स्थिति में, फरिश्तों की दुनिया में रमण करते रहो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। जब स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा, यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा फिर सम्पूर्णता के समीप आजायेंगे।

13- सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए संस्कारों को मिलाना होगा। संस्कार मिलाने के लिए कुछ भुलाना होगा, कुछ मिटाना होगा और कुछ समाना होगा। इन्हीं तीन बातों से अन्तिम सिद्धि का स्वरूप सहज अनुभव होगा। इसके लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो तब सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आयेंगी।

14- सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे, इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था, अब क्यों है! फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी, चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न होंगे, यही एक सेकेण्ड का पेपर होगा। जब यह क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों की क्यू को खत्म कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बन समय को समीप लाना है।

15- जैसे चन्द्रमा जब 16 कला सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी हरेक को अपनी तरफ आकर्षित करता है ऐसे कोई भी वस्तु सम्पन्न होती है तो अपने आप आकर्षण करती है। तो जब सम्पूर्णता के समीप पहुंचेंगे तो विश्व की सर्व आत्माओं को स्वत: आकर्षित करेंगे क्योंकि सम्पूर्णता में प्रभाव की शक्ति होती है। तो प्रभावशाली बनने के लिए सम्पन्न बनना पड़े।

16- जब देह-अभिमान को समाप्त कर अपनी अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त करेंगे तब सम्पन्नता समीप अनुभव होगी। पाण्डवों का गायन भी है कि गल कर खत्म हो गए। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गल कर निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए।

17- संगमयुग पर आप बच्चे एक-एक सेकण्ड में पद्मों की कमाई कर सकते हो, जितना याद की यात्रा में रहेंगे तो कमाई जमा होती जायेगी और जितना दूसरों को सन्देश देंगे उतना अपने को भी सम्पूर्णता का सन्देश मिलता रहेगा। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है। इस बन्धन में जितना अपने को बांध लेंगे उतना सर्व बातों से मुक्त होते जायेंगे।

18- सम्पन्न बनने के लिए अब संकल्पों को कन्ट्रोल करने का अभ्यास करो। पुरुषार्थ की कमज़ोरी के कारण ही व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है, अब इनको नामनिशान से खत्म करना है। पुरानी बातें, पुराने संस्कार ऐसे अनुभव हों जैसे कि नामालूम कब की पुरानी बात है। ऐसे नामनिशान खत्म हो जाये – तब सम्पूर्णता की स्टेज समीप आयेगी।

19- ब्राह्मणपन के सब कर्त्तव्य सम्पन्न करने के बाद ही सम्पूर्ण बनेंगे। अब का समय है हर कदम पर अटेन्शन रखकर चलने का। अटेन्शन न होने के कारण पुरुषार्थ का भी टेन्शन हो जाता है। एक तरफ वातावरण का टेन्शन रहता है, दूसरी तरफ पुरुषार्थ का भी टेन्शन रहता है। इसलिए सिर्फ एक शब्द याद रखो – अटेन्शन। फिर यह बहुरूप एक ही सम्पूर्ण रूप बन जायेगा।

20- जैसे किसी में रोते हुए को हंसाने की, कोई में हाथ की सफाई की, कोई में बुद्धि की चमत्कारी की कला होती है। ऐसे हर कर्म, हर चलन, देखना, बोलना, चलना सब कला वा चरित्र के मुआफ़िक दिखाई दे। जैसे साकार बाप को देखा उनका बोलना, चलना, देखना, उठना-बैठना, सब कला के रूप में था। सबमें न्यारापन और विशेषता थी। ऐसे आप बच्चों की हर चलन सम्पूर्ण कला के रूप में दिखाई दे, तब सम्पूर्णता की स्टेज समीप आयेगी।

21- सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए अपने को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाकर मास्टर दाता बनो। अभी दाता, विधाता और वरदाता बनकर विश्व की हर आत्मा को कुछ-न-कुछ दान वा वरदान देना है। दाता के बच्चे सर्व शक्तियों से सम्पन्न होते हैं। यही सम्पन्न स्थिति सम्पूर्ण स्थिति को समीप लाती है। जब इस समय सर्व शक्तियों से अपने को सम्पन्न करेंगे तब ही भविष्य में सदा सर्वगुणों से, सर्व पदार्थों से सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज को पा सकेंगे।

22- सर्व गुणों से सम्पन्न को ही सम्पूर्ण कहा जाता है। ऐसा सम्पूर्ण बनने के लिए सर्व समर्पण करना है। जब संकल्प में भी बाडी-कान्शस न हो, देह-अभिमान न हो, मैं फलानी हूँ यह संकल्प भी अर्पण हो तब कहेंगे सर्व समर्पण, सर्वगुणों से सम्पन्न। कोई भी गुण की कमी नहीं। तो लक्ष्य रखना है कि सर्व समर्पण कर, सर्वगुण सम्पन्न बन सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त करें।

23- आप सभी ने विश्व परिवर्तन की वा विश्व नव-निर्माण की जिम्मेवारी ली है, इस जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए व अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिए सम्पूर्ण आहुति डालनी पड़ेगी। इसके लिए ऐसी युक्ति अपनाओ जो सहज ही कमजोरियों से मुक्ति हो जाये और आप बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाओ। जैसे ब्रह्मा बाप - हर संकल्प, हर कर्म बच्चों के प्रति वा विश्व की आत्माओं के प्रति लगाते भी सम्पन्न बने, वैसे ही फालो फादर करो।

24- जो विश्व-महाराजन् बनने वाले हैं उनके पास अभी से ही सब स्टॉक भरपूर होगा जो कि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। तो चेक करो कि सर्व शक्तियों का, सर्व गुणों का स्टॉक अन्दर भरपूर है? जब सब स्टॉक भरपूर होगा तब समझो कि अब सम्पूर्ण स्टेज का व प्रत्यक्षता का समय नजदीक है।

25- अभी जो अपने पुरुषार्थ के लिए वा अपने तन के लिए समय देना पड़ता है, शक्ति भी देनी पड़ती है, मन भी लगाना पड़ता है, सम्पन्नता के समीप आने से यह स्टेज समाप्त हो जायेगी। फिर यह पुरुषार्थ बदली होकर ऐसा अनुभव होगा कि एक सेकेण्ड, एक संकल्प भी अपने प्रति नहीं बल्कि विश्व कल्याण के प्रति है। ऐसी स्टेज को ही कहा जायेगा–सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न।

26- अब समय की समीपता प्रमाण अपना कान्शस अर्थात् सूक्ष्म अभिमान ड्रामा अनुसार स्वत: समाप्त होता जायेगा। सोलकान्सेस स्टेज बनती जायेगी। जब निरन्तर आत्म-अभिमानी स्टेज बने तब कहेंगे सम्पूर्णता की स्टेज समीप है।

27- श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्मों द्वारा अपने तकदीर की तस्वीर मूल्यवान तो बना ली है। नैन चैन भी बन गये हैं। अब सिर्फ लास्ट टचिंग है ''सम्पूर्णता'' की, बाप समान बनने की। इसके लिए नयनों में रूहानी विश्व कल्याणी, रहमदिल और पर-उपकार की दृष्टि हो और चेहरे पर सदा सन्तुष्टता व प्रसन्नता की झलक हो।

28- जैसे बाप अपने रेस्ट का समय जो कि शरीर के लिए आवश्यक है, वह भी अपने प्रति न लगाकर विश्व-कल्याण अर्थ लगाते रहे, ऐसे सर्वशक्तियाँ भी विश्व कल्याण प्रति लगें न कि अपने प्रति। जब दूसरों को देने लग जायेंगे तो अपने आपको सर्व बातों में सम्पन्न होने का अनुभव करेंगे। दूसरों को पढ़ाने में अपने को पढ़ाना ऑटोमेटिकली हो जायेगा। जब समय समीप आ रहा है तो दूसरों को देने के साथ-साथ अपना जमा करो।

29- जैसे-जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता जा रहा है, वैसे-वैसे संकल्प में भी व्यर्थ न गंवाने की जिम्मेवारी भी हरेक आत्मा के ऊपर बढ़ती जा रही है। इसलिये समय के प्रमाण अपने स्वमान को कायम रखते हुए जिम्मेवारी को सम्भालते जाओ तो अलबेलापन समाप्त होता जायेगा। सम्पन्नता के समीप आते जायेंगे।

30- सम्पूर्ण स्टेज को पाने के लिए अब पुरुषार्थ की स्पीड तेज करो, इसके प्लैन बनाओ। अमृतवेले अपने पुरुषार्थ की उन्नति का प्लैन सेट करो और वह प्लैन बुद्धि में रखो। फिर रात को यह चेक करो कि अपनी सेट की हुई प्वॉइन्ट को कहाँ तक प्रैक्टिकल में और कितनी परसेन्टेज तक धारण कर सके?

✡✡✡

31- अब थोड़े समय के अन्दर अपने को सम्पन्न बनाने के लिए साधारण पुरूषार्थ नहीं चलेगा। अभी संकल्प, बोल और कर्म इन तीनों में समानता का अभ्यास करना है, इसको ही तीव्र पुरुषार्थ कहा जाता है। जो बुद्धि में सोचते हो, संकल्प करते हो वही बोल और कर्म में हो। जब तीनों ही समान हो जायें तब कहेंगे बाप-समान सम्पन्न।

32- अब सारे विस्तार को जीवन में समाकर बाप-समान सम्पन्न बनने का लक्ष्य रखो। न कोई पुराना स्वभाव हो और न कोई लगाव हो। जबकि तन, मन और धन सभी बाप को समर्पण कर दिया, तो देने के बाद फिर मेरा विचार, मेरी समझ और मेरा स्वभाव यह शब्द भी न हो। इस मैं और मेरेपन को समाप्त करो तब सम्पन्न और सम्पूर्ण बनेंगे।

33- **बापदादा बच्चों को यही कहते हैं - बच्चे समान भव, सम्पन्न भव, सम्पूर्ण भव।** इसका सबसे सहज साधन है – सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। **अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो।** मन से वैराग्य हो। सम्पूर्णता के दर्पण में लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। अब सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ।

34- चित्रकारों ने महावीर को जो पूँछ की निशानी दी है, यह लगाव और स्वभाव की पूँछ है। जब तक इस पूँछ को आग नहीं लगाई है, तब तक लंका को आग नहीं लग सकती। इसलिये अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो।

35- सम्पन्नता को समीप लाने के लिए जितना ही बेहद के विशाल स्वरूप की सर्विस तीव्र रूप से करते जा रहे हो, इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपराम वृत्ति व वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में वैराग्य उत्पन्न करेगी। वैराग्य के बाद ही समाप्ति होगी।

36- जो गायन है कि करते हुए अकर्त्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, अब ऐसी स्टेज का अनुभव करो। कोई में भी लगाव न हो, सर्विस में भी निमित्त भाव हो। अब अपने कार्य को समेटना शुरू करो। जब अभी से समेटना शुरू करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। कार्य समेटना अर्थात् स्वयं के लगाव को समेटना है।

37- जैसे बाप-दादा लाइट और माइट रूप हैं तो बाप-समान सम्पन्न बनना अर्थात् लाइट और माइट स्वरूप बनना। बाप सर्वशक्तिमान् है तो बाप समान सर्व शक्ति सम्पन्न हो ही गये। बाप सदा सिद्धि स्वरूप हैं ऐसे बाप-समान आत्मा भी सर्व सिद्धि स्वरूप है। जो बाप की महिमा है वह सर्व महिमा के योग्य अर्थात् सर्व योग्यताओं का सम्पन्न स्वरूप हैं।

38- सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले की ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जायेगी और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे। तो चेक करो - देह के अभिमान से भी सम्पूर्ण समर्पण बने हैं? देह के सम्बन्ध और मन के संकल्पों से भी देही हैं? यह देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जाए सर्व समर्पणमय सम्पन्न जीवन।

39- सम्पूर्ण स्थिति को साकार रूप में लाने के लिए साकार बाप को सामने देखो। जैसे ब्रह्मा बाप की स्थिति सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति थी। तो उनकी अन्तिम स्थिति और अपनी वर्तमान स्थिति को देखो उसमें कितना फर्क समझते हो? उनके हर गुण, हर कर्म को अपने कर्म और वाणी से भेंट करो तो मालूम पड़ जायेगा। वर्तमान समय मैजारटी के पुरुषार्थ की रिजल्ट 75 परसेन्ट से कम नहीं होनी चाहिए।

40- हर बच्चे को अब यही लक्ष्य रखना है कि इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है, भल कैसी भी समस्यायें हों, सम्बन्धों का वा शरीर का बंधन हो। कोई भी आधार अधीन न बना दे। ऐसे नहीं सोचना कि शरीर का रोग न हो तो हम पुरुषार्थ करें। यह बन्धन हट जाए तो हम जीवनमुक्त बनें। लेकिन यह तो एक बन्धन हटेगा दूसरा आयेगा। तन का बन्धन हटेगा, मन का आयेगा, धन का आयेगा, सम्बन्ध का आयेगा.. यह खुद नहीं हटेंगे। अपनी ही शक्ति से हटाने हैं।

❋❋❋

41- जैसे साकार ब्रह्मा बाप का मुख्य संस्कार था - सर्वस्व त्यागी। निरंहकारी का मतलब ही है सर्वस्व त्यागी। ऐसे संगमयुगी ब्राह्मणों का भी यही मुख्य संस्कार होना चाहिए। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जायेंगे। दूसरों के अवगुणों को न देखना यह भी त्याग है। त्याग का अभ्यास होगा तो यह भी त्याग कर सकेंगे। सर्वस्व त्यागी अर्थात् देह के भान का भी त्याग हो तब सम्पूर्ण बनेंगे।

42- शक्तियों और पाण्डवों के रूप में संगम का सम्पूर्ण स्वरूप गाया हुआ है, अब वह प्रत्यक्ष आप सभी को अपने में महसूस होगा। हरेक सितारे के अन्दर जो राजधानी अथवा दुनिया बनी हुई है, जब वह प्रत्यक्ष रूप लेगी तब जय-जयकार होगी और सभी अहो प्रभु का नारा लगायेंगे। अब यह समय नजदीक आ रहा है इसलिए अब जल्दी परिवर्तन को लाना है।

43- कोई भी पार्ट बजाते स्वयं को मेहमान समझकर रहो। अपने को मेहमान समझेंगे तो व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त में रहेंगे। मेहमान का किसके साथ भी लगाव नहीं होता है। हम इस शरीर में भी मेहमान हैं। इस पुरानी दुनिया में भी मेहमान हैं। सिर्फ थोड़े समय के लिए यह शरीर काम में लाना है जब इतना न्यारे बनो तब उपराम बन सम्पन्नता की समीपता का अनुभव कर सकेंगे।

44- सदा यही उमंग और निश्चय बना रहे कि हम सम्पूर्ण बनेंगे और सर्व को बनायेंगे। यही उमंग-उत्साह सदा कायम रहे तो अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी। इसके लिए सिर्फ दो बातें मुख्य याद रखना - एक तो मणि को देखना, देह रूपी सांप को नहीं देखना। और दूसरी बात - अपने को अवतरित समझना।

45- स्नेह ही सम्पूर्ण बनाता है। परन्तु स्नेह के साथ फिर शक्ति भी चाहिए। दोनों का जब मिलन हो जाता है तो स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। जितना समानता में समीप होंगे उतना ही कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेंगे। यही समानता का मीटर है।

46- अब स्वयं को इतने तक मिटाना है जो नेचर भी बदल जाये। जब नेचर बदलेगी तब अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज की पिक्चर है फरिश्ता बनना। फरिश्ता अर्थात् जिसमें बिल्कुल हल्कापन हो। संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के, कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के – जब इन चारों बातों में हल्कापन होगा तब फरिश्तेपन की अवस्था बनेगी। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तब समझना अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है।

47- जब सम्पूर्ण स्टेज के समीप पहुंचेंगे तो ऐसी स्थिति हो जायेगी जो किसके भी मन में जो संकल्प उठेगा वह आपके पास पहले ही पहुंच जायेगा। बोलने, सुनने की आवश्यकता नहीं। लेकिन यह तब होगा जब अपने संकल्पों पर फुल ब्रेक होगी। ब्रेक पावरफुल हो। अगर अपने संकल्पों को समेट नहीं सकेंगे तो दूसरों के संकल्पों को समझ नहीं सकेंगे। यह भी सम्पूर्ण स्टेज की परख है।

48- सम्पूर्ण बनने में विशेष विघ्न व्यर्थ संकल्पों के रूप में आता है। इसके लिए एक तो कभी अन्दर बाहर की रेस्ट न लो। दूसरी बात अपने को सदैव गेस्ट समझो, इससे पुरुषार्थ भी सरल हो जायेगा। पुरुषार्थ में याद की यात्रा और सर्विस दोनों ही बातें आ जाती हैं। जब दोनों में सरल अनुभव हो तब समझो सम्पूर्णता की अवस्था प्राप्त होने वाली है।

49- सम्पूर्ण स्थिति वाले पुरुषार्थ कम करेंगे, सफलता अधिक प्राप्त करेंगे। इसके लिए याद का बल, स्नेह का बल, सहयोग का बल और सहन का बल इन चारों की ही समानता हो तब समझो सम्पूर्णता समीप है।

50- जो सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि हैं, वह विजयी हैं ही। हम विजयी बनें इस संकल्प का भी त्याग, ऐसे सर्वस्व त्यागी और सर्व संकल्पों के त्यागी बनना, यही है सम्पूर्ण स्थिति। मैंने सर्विस की, मैंने टच किया...यह मैं-पन मिटाना ही मर मिटना है। जब कोई भी बात न निन्दा-स्तुति, न मैं, न तुम, न मेरा, न तेरा कुछ भी स्वीकार न करो तब सम्पूर्ण स्थिति बनेगी।

51- आप लोग मन में जो संकल्प करते हो वह आपके मन में पीछे आता है उसके पहले बापदादा के पास स्पष्ट हो जाता है क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूंध स्पष्ट देखने में आती है। ऐसे आप भी जब सम्पूर्णता के समीप पहुँचेंगे तो भविष्य ऐसे स्पष्ट होता जायेगा जैसे वर्तमान स्पष्ट है। ड्रामा की हर नूंध को पहले से ही जान लेंगे।

52- सम्पन्न बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ 1- आवाज में आना जितना सहज है उतना ही आवाज से परे जाना सहज हो। 2- जैसे साकार स्वरूप अपना अनुभव होता है, ऐसे अपना अनादि निराकारी स्वरूप जो अविनाशी है उसमें स्थित होना नेचुरल हो। संकल्प किया और स्थित हुआ - इसी को ही बाप समान सम्पूर्ण अवस्था, कर्मातीत अन्तिम स्टेज कहेंगे।

53- संकल्पों को रीड करना – यह भी एक सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना अव्यक्त भाव में स्थित होंगे उतना हरेक के भाव को सहज समझ जायेंगे। अव्यक्त स्थिति एक दर्पण है। जब आप अव्यक्त स्थिति में स्थित होते हो तो कोई भी व्यक्ति का भाव, अव्यक्त स्थिति रूपी दर्पण में बिल्कुल स्पष्ट देखने में आयेगा फिर मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

54- जो भी कार्य करते हो, हर कार्य में तीन बातें चेक करो: 1- सभी प्रकार से सरलता। 2- सहनशीलता और 3- श्रेष्ठता - यह तीनों बातें कहाँ तक आई हैं! किसी भी बात में साधारणता न हो तो सम्पूर्णता समीप आ जायेगी।

55- सम्पूर्ण मूर्त बनने के लिए हर दिन कुछ छोड़ो और कुछ स्वयं में भरो। जो भी कमियां हैं, उन्हें दृढ़ता के संकल्प से छोड़ते चलो और विशेषताओं को भरते चलो। जब इतना अटेन्शन रखेंगे तब समय के पहले सम्पूर्ण बन सकेंगे।

56- जो बहुत समय से सम्पूर्ण बनने के पुरूषार्थ में मग्न रहेंगे वही सम्पूर्ण समय राज्य के अधिकारी बनेंगे। इसके लिए 1- ज्ञान-मूर्त, 2. गुण-मूर्त, 3.दान-मूर्त और 4. सम्पूर्ण सफलतामूर्त बनो। एक मूर्त में चार मूर्त का सभी को साक्षात्कार हो तब सम्पूर्ण बनेंगे।

57- जैसे साकार बाप ने सर्व समर्पण के लक्ष्य से सम्पूर्णता को प्राप्त किया, ऐसे फालो फादर करो। इसमें एक तो अपना हर संकल्प समर्पण हो, दूसरा समय समर्पण हो, तीसरा कर्म भी समर्पण हो और चौथा सम्बन्ध और सम्पत्ति भी समर्पण हो। विनाशी सम्पत्ति के साथ जो अविनाशी सम्पत्ति सुख, शान्ति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द की प्राप्ति होती है उसे भी अन्य आत्माओं की सेवा में समर्पित कर स्वयं साक्षी स्थिति में रहना - यही विधि है सम्पूर्णता को प्राप्त करने की।

58- जितना-जितना अपनापन समायेंगे उतना समानतामूर्त बनेंगे। समाना अर्थात् समान हो जाना। तो अपनापन बिल्कुल समा जाये। एक की याद में मग्न होना ही सम्पूर्ण स्थिति में टिकना है। जैसे फोटो निकालते समय अपने को स्थिर करते हो, वैसे ही सदैव समझो कि हमारे भक्त हर समय हमारा साक्षात्कार कर रहे हैं। तो साक्षात्कार मूर्त बनने के लिए स्थिर बुद्धि, एकटिक स्थिति आवश्यक है तभी सम्पन्नता वा सम्पूर्णता का साक्षात्कार करा सकेंगे।

59- सम्पूर्ण फरिश्ता वा अव्यक्त फरिश्ता - यह है संगमयुग की डिग्री। और दैवी पद है भविष्य की प्रारब्ध। तो सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता की डिग्री तब मिलेगी जब सभी गुणों में फुल होंगे। हर क्वालिटी के पीछे फुल शब्द है - फेथफुल, पावरफुल ....। सम्पूर्ण स्टेज में सभी गुण, सभी लक्षण समान रूप में और प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देंगे, जिससे सभी की नम्बरवार प्रत्यक्षता होनी है।

60- जितना साक्षीद्रष्टा रहेंगे उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनेंगे। इसके लिए अभ्यास करो – अभी-अभी आधार लिया, अभी-अभी न्यारे हो गये। यह अभ्यास बढ़ाना अर्थात् सम्पूर्णता के समय को समीप लाना। जब अभी आपका सम्पूर्ण स्वरूप प्रत्यक्ष होगा तब आपके भक्त प्रत्यक्ष रूप में अपने इष्ट को पा सकेंगे।

61- सदा याद रखो – समस्याओं को दूर भगाना है और सम्पूर्णता को समीप लाना है। समस्याओं का सामना करो तो समस्या समाप्त हो जाये। समस्या पैदा होते ही फौरन समाप्त कर दो तो फिर वंश पैदा नहीं होगा। समस्या के बर्थ को कन्ट्रोल करो। बापदादा के गुण और कर्त्तव्य को निशाना बनाओ।

62- सदा याद रखो कि बापदादा के साथ मैं भी अधर्म विनाश और सतधर्म की स्थापना के कर्त्तव्य अर्थ निमित्त बनी हुई हूँ। मैं मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम हूँ, तो मर्यादाओं को तोड़ नहीं सकते हैं, ऐसी स्मृति रखने से समान और सम्पूर्ण स्थिति हो जायेगी। सोचो कम, कर्त्तव्य अधिक करो।

63- बुद्धि में सदैव बापदादा की स्मृति व निशाना हो, नयनों में आने वाले राज्य के नज़ारे, मुख में सदैव बापदादा का नाम हो इसको कहते हैं बापदादा के अति स्नेही और समीप रत्न। तो यही दाव लगाओ कि हम समीप रत्न, विजयी और सम्पूर्ण बनकर ही दिखायेंगे।

64- हर कार्य करते स्मृति रहे कि बेहद की स्टेज के बीच पार्ट बजा रहा हूँ, सारे विश्व की आत्माओं की नज़र मेरी तरफ है – ऐसा समझने से सम्पूर्णता को जल्दी धारण कर सकेंगे। एक स्लोगन सदा याद रहे तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकेंगे – **''डिले इज डेंजर''।** अगर कोई भी बात में देरी की तो राज्य-भाग्य के अधिकार में भी इतनी देरी पड़ जायेगी।

65- सम्पूर्ण बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान ही विघ्न डालते हैं। इस कम्पलेन्ट को समाप्त करने के लिए रोज़ अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपॉइन्टमेंट की डायरी बनाओ। समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो। मन को 4 बातों में बिज़ी रखो - 1. मिलन, 2. वर्णन, 3. मगन, 4. लगन। वर्णन है सर्विस, मिलन है रूह-रूहान करना। इन चार बातों में अपने समय को फिक्स करो तो व्यर्थ की कम्पलेन्ट समाप्त हो जायेगी, कम्पलीट बन जायेंगे।

66- अल्पकाल के साधनों को स्वीकार करने में बेगर बनो तब सम्पन्नमूर्त बनेंगे। एक तरफ बेगर दूसरे तरफ सम्पन्न। ऐसी आत्माओं को कहा जाता है सदा त्यागी और सदा श्रेष्ठ भाग्यशाली। स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या। जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा, ऐसे फालो फादर कर समान बनो।

67- अब अपना सम्पूर्ण स्वरूप और भविष्य स्वरूप ऐसे दिखाई दे जैसे शरीर छोड़ने वाले को बुद्धि में स्पष्ट रहता है कि अभी-अभी यह छोड़ नया शरीर धारण करना है। ऐसे बुद्धि में रहे कि अभी-अभी इस स्वरूप को धारण करना है। जैसे स्थूल चोला बहुत जल्दी धारण कर लेते हो, वैसे यह सम्पूर्ण स्वरूप धारण करो।

68- सम्पूर्ण बनने के लिए तीन शब्द याद रखना - **तोड़ना, मोड़ना और जोड़ना। कर्म बन्धन तोड़ना है। अपने संस्कारों को, स्वभावों को मोड़ना है और एक बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ना है। तीनों में कोई भी कमी न हो तो जल्दी सम्पूर्ण बन जायेंगे।**

69- सदा अपनी सम्पूर्ण स्थिति का वा अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहो। तो वही स्मृति में रहेगा। फिर आवागमन का जो चक्र चलता रहता है, इस चक्र से मुक्त हो जायेंगे। व्यर्थ बातों से किनारा करने से सदैव चमकता हुआ लक्की सितारा बन जायेंगे।

70- हर कर्म मास्टर त्रिकालदर्शी की स्टेज पर स्थित होकर करो तो कोई भी कर्म व्यर्थ और साधारण नहीं होगा। विकर्म की तो बात ही नहीं है। अभी व्यर्थ को बदलकर समर्थ संकल्प और समर्थ कर्म करो जितना समर्थ और श्रेष्ठ संकल्प, बोल और कर्म होगा उतना सदा खुशी की झलक, खुशनसीबी की फलक अनुभव होगी और अनुभव करायेगी।

71- सम्पूर्ण स्टेज जिसमें कोई भी प्रकार की अधीनता नहीं रहेगी। सर्व पर अधिकार अनुभव करेंगे। ऐसा बनने के लिए एक तो रूहानियत में रहो, दूसरा चेहरे पर सदैव ईश्वरीय रूहाब दिखाई दे और तीसरा सर्विस में सदैव रहमदिल का संस्कार वा गुण हर आत्मा को प्रत्यक्ष अनुभव हो तब समझो सम्पन्नता वा सफलता हमारे समीप आ रही है।

72- यह नहीं सोचना कि सम्पूर्ण तो अन्त में बनना है इसलिए थोड़े बहुत पुराने संस्कार तो रहेंगे ही। लेकिन नहीं। त्याग अर्थात् त्याग। जेब खर्च मुआफ़िक अपने अन्दर थोड़ा बहुत भी संस्कार रहने नहीं देना। रात के समय जब दिन को समाप्त करते हो तो याद-अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को खत्म कर देना। जब बहुत समय से अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बनेंगे।

73- अन्त के समय नई-नई परीक्षायें आयेंगी, जिन परीक्षाओं को पास करने से ही सम्पूर्णता की डिग्री मिलेगी। इसके लिए अभी से अपनी सम्पूर्ण स्टेज वा बाप के समान स्टेज वा कर्मातीत स्थिति की स्टेज के सेट को ऐसा सेट कर दो जो हर संकल्प, शब्द वा कर्म उसी सेटिंग के प्रमाण आटोमेटिक चलता रहे, कोई भी पेपर आ जाए उसमें स्थिति की सेटिंग एकरस रहे, जरा भी हलचल न हो।

74- अपनी सम्पूर्ण योगयुक्त स्थिति को अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज को परखने के लिए चेक करो कि कितने बन्धनों से मुक्त हुए हैं और कितने बन्धन अभी तक रहे हुए हैं? योगयुक्त की निशानी है - बन्धनमुक्त होना। सभी से बड़े ते बड़ा अन्तिम बन्धन है श्रीमत के साथ अपने ज्ञान की बुद्धि को मिक्स करना अर्थात् अपने को समझदार समझकर, श्रीमत को अपनी बुद्धि की कमाल समझकर काम में लगाना। इस बन्धन से क्रास किया तो मानो सभी से बड़े ते बड़ा जम्प दिया।

75- कोई भी बात में अगर कोई मधुर शब्दों में भी कमजोरी का इशारा दे और उसी समय कोई संस्कार, स्वभाव वा सर्विस के लिए बड़ाई (महिमा) आकर करे तो दोनों बातों में ज़रा भी वृत्ति, दृष्टि वा सूरत में फर्क नहीं आना चाहिए। ज़रा भी हिम्मत-उल्लास में अन्तर नहीं आये, इसको कहा जाता है – इस बन्धन को क्रास करना अर्थात् सम्पूर्ण बनना।

76- जो गायन है - निन्दा-स्तुति, हार-जीत, महिमा वा ग्लानि में समान। बुद्धि में नॉलेज है कि यह हार है, यह जीत है, यह महिमा है, यह ग्लानि है ... लेकिन दोनों में अवस्था एकरस रहे अर्थात् स्थिति डगमग न हो – इसको कहा जाता है समानता। ऐसी समान स्थिति में रहने वाली आत्मा ही सम्पूर्ण फरिश्ता बनती है।

77- कोई भी बात वा समस्या को ट्रॉन्सफर कर ट्रान्सपेरेन्ट (पारदर्शी) बनना अथवा अपकारी पर भी उपकार करना ही विश्व कल्याणकारी बनना है, जब ऐसी स्थिति बन जाती है तब समझो सम्पूर्णता के समीप हैं। ऐसे नहीं जिनके संस्कार मिलेंगे उनको साथी बनायेंगे, दूसरों से किनारा कर लेंगे। भल कड़े संस्कार वाले हो, उनको भी अपनी शुभचिन्तक स्थिति के आधार से ट्रॉन्सफर कर समीप लाओ – यही सम्पन्नता की निशानी है।

78- सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण फरमानबरदार और सम्पूर्ण वफ़ादार बनो। फरमानबरदार उसको कहते हैं जो एक संकल्प भी फरमान के बिगर न करे और सम्पूर्ण वफ़ादार उसे कहा जाता है जो हर वस्तु की सम्भाल करे। भल जान भी चली जाए लेकिन कोई चीज़ का नुकसान न हो। वे जो करेंगे वह ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। ऐसे फरमानवरदार, वफ़ादार और ईमानदार बच्चे ही सम्पन्नता को प्राप्त करते हैं।

79- जब 16 कला सम्पूर्ण कहते हो तो सर्व कलायें स्वभाव में होनी चाहिएँ। जो कभी-कभी कहते हो कि यह मेरा स्वभाव है, मेरा कोई यह भाव नहीं है। तो यह मन की भावनायें भी एक-दो से मिलनी चाहिएँ। जैसे कहते हैं कि यह एक ही सांचे से निकले हुए हैं, एक ही भाषा बोलते हैं, एक ही ढंग है– वैसे अब यह प्रसिद्ध दिखाई दे कि इनके मन की भावनायें और स्वभाव एक ही सांचे से निकले हुए हैं।

80- सम्पन्न बनने के लिए अपने मन्सा संकल्पों के पोतामेल को चेक करो कि व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के ऊपर कहाँ तक विजयी बने हैं? संस्कार और स्वरूप में कहाँ तक बाप समान आकर्षण रूप, स्नेही रूप, सहयोगी रूप बने हैं? ऐसे अपना पोतामेल चेक करने से अब तक जो कमी वा कमज़ोरी रह गई है उसको समाप्त कर सम्पन्न वा सम्पूर्ण बन सकेंगे।

81- सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म में विजयी बनो। इस सम्पूर्ण निशाने को निशाना बनाओ। जैसे निरन्तर याद में रहना है वैसे निरन्तर विजयी बनना है। बहुत समय से सदा के विजयी, हर कदम के विजयी, हर संकल्प के विजयी रहेंगे तब ही विजय माला में समीप के मणके बन सकेंगे।

82- अपने आकारी फरिश्ते स्वरूप में स्थित रहना ही सम्पन्नता की समीपता है। अन्त समय में जब चारों ओर हंगामें होंगे उस समय साकार शरीर द्वारा कुछ कर नहीं सकेंगे फ़रिश्ते स्वरूप द्वारा सेवा करने से ही प्रभाव निकलेगा। इसके लिए अभी से अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित रहो। भल कितना भी कार्य में बिजी रहते हो लेकिन अपने सामने सदैव सम्पूर्ण स्टेज होनी चाहिए कि उस स्टेज पर बस पहुँचे कि पहुँचे। जब आप सम्पूर्ण स्टेज को समीप लायेंगे तो समय भी समीप आ जायेगा।

83- जितनी अपने सामने सम्पूर्ण स्टेज समीप होती जायेगी, उतनी विश्व की आत्माओं के आगे आपकी अन्तिम कर्मातीत स्टेज का साक्षात्कार स्पष्ट होता जायेगा। वर्तमान समय वायुमण्डल और वृत्तियां परिवर्तन में आ रही हैं, मुश्किल बातें सरल होती जा रही हैं, संकल्प भी सिद्ध होते जा रहे हैं। निर्भयता के साथ संकल्पों में दृढ़ता आती जाती है, यही सम्पूर्ण स्टेज के समीपता की निशानियां हैं।

84- जैसे भविष्य में आप सभी के आगे प्रकृति दासी बन जायेगी, प्रकृति दासी होना - यही सम्पूर्ण स्टेज है। तो जब प्रकृति दासी बन सकती है तो पुराने संस्कारों को दासी बनाना क्या बड़ी बात है! जैसे दासी वा दास सदा जी हजूर करते हैं वैसे यह कमजोरियां भी जी हजूर कर खड़ी होंगी, टच नहीं करेंगी। इसके लिए अपने आपके टीचर बनो। जो अपने टीचर नहीं बनते हैं वह कमजोर रह जाते हैं।

85- अभी-अभी पुरुषार्थी, अभी-अभी फरिश्ता रूप... इतना समीप अपनी सम्पूर्ण स्थिति दिखाई देनी चाहिए। जब समय इतना नजदीक है तो सम्पूर्ण स्थिति भी नज़दीक हो, इससे भी पुरुषार्थ में बल भरेगा। जैसे कोई को मालूम पड़ जाता है कि मंजिल अभी सिर्फ इतनी थोड़ी-सी दूर है, तो मंजिल पर पहुंचने की खुशी में सभी बातें भूल जाते हैं। तो अपने सामने सम्पूर्णता के समय को और समय के साथ अपनी प्राप्ति को रखो तो आलस्य वा थकावट मिट जायेगी।

86- सम्पूर्णता में दो बातों की समानता चाहिए - जितना एकान्तवासी उतना रमणीक। शब्दों में तो बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी-अभी रमणीक, जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार भी हो।

87- अन्तिम समय के लिए अपने को सर्वगुण सम्पन्न बनाओ, एवररेडी बनो। एवररेडी अर्थात् सम्पन्न स्टेज। सिर्फ एक कदम उठाने की देरी हो। ऐसा एवररेडी बाप समान बनने के लिए मुख्य तीन चीज़ें सदा साथ रहें - 1- लाइट, 2- माइट और 3- डिवाइन इनसाइट अर्थात् तीसरा नेत्र।

88- जो भी बातें सम्पूर्ण बनने में विघ्न रूप बनती हैं, उन बातों को परिवर्तन करने की युक्ति आ जाए तो विघ्नों से मुक्त हो सकते हो। व्यर्थ स्मृति को, देह वा देह के संबंध, देह के पदार्थों की स्मृति को परिवर्तन कर देही बन जाओ तो सहज ही सम्पूर्णता की समीपता का अनुभव करेंगे।

89- रूहानी ड्रिल के अभ्यास द्वारा एक सेकेण्ड में जिस स्थिति में जितना समय और जिस समय चाहो स्थित हो जाओ, कोई भी आकर्षण अपनी ओर आकर्षित न करे। अपनी देह के हिसाब-किताब, रहे हुए कर्म-भोग के रूप में आने वाली परिस्थितियाँ, अपनी तरफ आकर्षित न करें, जब यह आकर्षण भी समाप्त हो जाये तब कहेंगे सम्पूर्णता के समीप अर्थात् सम्पूर्ण नष्टोमोहः।

90- देह की वा देह के दुनिया की कोई भी परिस्थिति स्थिति को हिला नहीं सके, इसी स्थिति का ही गायन अंगद के रूप में गाया हुआ है। वास्तव में यही आपकी सम्पूर्ण स्टेज है, जो बुद्धि रूपी पाँव को प्रकृति व माया की परिस्थितियाँ जरा भी हिला नहीं सकें।

91- आपकी दृढ़ता ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी। सम्पन्न बनने के लिए प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट यह तीनों ही सम्पूर्ण बनाने की मुख्य बातें हैं। तो अपने आप से पूछो कि सदा सतोप्रधान आत्मिक दृष्टि, सदा हर संकल्प, हर बोल व कर्म में प्योरिटी की झलक कहाँ तक आयी है?

92- अब अशरीरी भव के वरदानी बनो, जिस समय संकल्प करो कि मैं अशरीरी हूँ, उसी सेकेण्ड स्वरूप बन जाओ। ऐसा अभ्यास सहज अनुभव होना – यही सम्पूर्णता की निशानी है। कभी सहज, कभी मुश्किल, कभी सेकेण्ड में, कभी मिनट में या और भी ज्यादा समय में अशरीरी स्वरूप का अनुभव होना अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज अभी दूर है। सदा सहज अनुभव होना – यही सम्पूर्णता की परख है।

93- संगमयुग के ही अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज का चित्र भविष्य चित्र में दिखाते हैं। भविष्य के साथ पहले सर्व प्राप्ति का अनुभव संगमयुगी ब्राह्मणों का है। अन्तिम स्टेज पर ताज, तख्त, तिलकधारी, सर्व अधिकारीमूर्त बनते हो, मायाजीत, प्रकृतिजीत बनते हो। बाप द्वारा मिली हुई अलौकिक सम्पत्ति– ज्ञान, गुण और शक्तियां इस सम्पत्ति में सम्पन्न होते हो, यह सम्पन्नता ही सम्पूर्णता है।

94- दर्शन सदैव सम्पूर्ण मूर्ति का किया जाता है, खंडित मूर्ति का दर्शन नहीं होता। किसी भी प्रकार की कमी अर्थात् खंडित मूर्ति। तो दर्शन कराने योग्य सम्पन्न मूर्ति बनो। मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने तीनों कालों को जानते हुए स्वयं को सम्पन्न-मूर्त अर्थात् दर्शनीय मूर्त बनाओ।

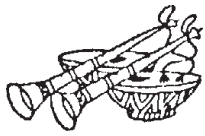

95- अब स्वयं के परिवर्तन की घड़ी निश्चित करो। स्वयं को सम्पन्न करो तो विश्व का कार्य सम्पन्न हो ही जायेगा। सम्पूर्णता का सूर्य उदय होना अर्थात् अन्धकार समाप्त होना। आप शक्तियों की सम्पूर्णता जैसे अन्धों के आगे आईने का काम करेगी।

96- जैसे आत्म-ज्ञानी, आत्मा का परमात्मा में समा जाना ही अन्तिम सम्पूर्ण स्थिति मानते हैं। इस अन्तिम आहुति का स्वरूप है – मैं-पन समाप्त हो, बाबा, बाबा, का बोल ही मुख से व मन से निकले अर्थात् बाप में समा जाये, इसको कहा जाता है, समा जाना अर्थात् समान बन जाना। संकल्प, स्वप्न में भी देहभान का मैं-पन न हो। अनादि आत्मिक स्वरूप की स्मृति हो; बाबा-बाबा अनहद शब्द हो तब सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त कर सकेंगे।

97- जैसे-जैसे सम्पूर्णता के समीप आते जाते हो, वैसे-वैसे पुरुषार्थ का स्वरूप भी बदलता जाता है। जैसे कोई भी ऑटोमेटिक चलने वाली वस्तु को एक बारी स्टार्ट कर दिया तो चलती रहती; बार-बार चलाना नहीं पड़ता। इसी प्रकार से एक बार लक्ष्य मिला और फिर ऑटोमेटिक हर कदम, हर संकल्प, समय के चढ़ती कला प्रमाण चलते रहे – ऐसे अनुभव होना - यही सम्पूर्ण स्टेज का पुरुषार्थ है।

98- सम्पूर्णता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुण ग्राहक बनो। अपनी गलती दूसरे पर डालने के बजाए स्वयं को बदलने का लक्ष्य रखो। स्व के प्रति स्व-चिंतक बन स्वचिंतन करो तो सहज ही मायाप्रूफ, कमजोरियों को ग्रहण करने से प्रूफ बन जायेंगे। व्यक्ति व वैभव की आकर्षण से भी प्रूफ हो जायेंगे।

99- कभी-कभी बाप के गुण गाते-गाते, अपने आपके भी गुण गाने शुरू कर देते हो। उसमें मैं-पन का भाव होने के कारण आत्माओं की भावना समाप्त हो जाती है – यही सबसे बड़े से बड़ा अति सूक्ष्म बंधन है। इस बंधन से मुक्त होना अर्थात् सम्पन्न् बनना। यही सबसे बड़ा त्याग है। इसी त्याग के आधार पर नम्बरवन आत्मा ने नम्बरवन भाग्य बनाया। तो फालो फादर करो।

100- मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार, मेरी नेचर, मेरा काम या ड्युटी, मेरा नाम, मेरी शान, यह मैं-पन और मेरा-पन समाप्त हुआ तो यही समानता और सम्पूर्णता है। स्वप्न में भी मैं पन न हो, इसको कहा जाता है, अश्वमेध यज्ञ में मैं-पन के अश्व को स्वाहा करना। यही अन्तिम आहुति है और इसी के आधार पर ही अन्तिम विजय के नगाड़े बजेंगे।

101- जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप की समानता के नजदीक होंगे, उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज्य अधिकारी होंगे और आदि भक्त जीवन में भी समीप, सम्बन्ध में होंगे अर्थात् आदि आत्मा के सारे कल्प में सम्बन्ध वा सम्पर्क में रहेंगे। अब की सम्पूर्ण स्थिति की समीपता अर्थात् बापदादा की समीपता ही सारे कल्प की समीपता का आधार है।

102- समीपता का आधार श्रेष्ठता है और श्रेष्ठता का आधार अपने मरजीवे जीवन में विशेष दो बातों की चेकिंग करो 1- सदा परोपकारी बने हैं? दूसरा - आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं? ब्रह्मचारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा समान पवित्र जीवन। नम्बरवन बनने में जो कुछ कमी रह गई है उसको सम्पन्न कर सम्पूर्ण बनो क्योंकि सम्पूर्ण बाप के बच्चे भी बाप समान सम्पूर्ण चाहिएँ।

103- सम्पूर्णता की समीपता ही विश्व-परिवर्तन के घड़ी की समीपता है इसलिए अब बीती सो बीती कर व्यर्थ का खाता समाप्त करो। सदा समर्थ का खाता हर संकल्प में जमा करो – अभी से सदाकाल के लिए अपने को ताज, तिलक और तख्तधारी अनुभव करो।

104- सदा अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखने से माया का सामना करना सहज होगा। बाप-दादा यही रिज़ल्ट देखना चाहते हैं – इस रिज़ल्ट को प्रैक्टिकल में लाने के लिए विशेष धारणायें याद रखो – 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

105- अब सम्पूर्णता के आईने में स्वयं का स्वरूप देखो। स्वयं को सम्पन्न बनाकर सैम्पल बनो। चेक भी करो और चेन्ज भी करो। हर कदम में चढ़ती कला होने से सम्पूर्ण स्टेज तक बहुत जल्दी पहुँच जायेंगे। चढ़ती कला वाले को सदा अपनी सम्पूर्ण स्टेज अर्थात् मंजिल स्पष्ट दिखाई देगी। जितना जिस वस्तु के नजदीक जाते हैं उतना ही वह वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है, स्पष्टता ही समीपता की निशानी है।

106- सभी बच्चों प्रति बापदादा का यही एक श्रेष्ठ संकल्प है कि सब बच्चे बाप समान बन जाएं। जैसे बाप आप सबके समान, स्नेह के कारण, साकार वतन निवासी, साकार रूपधारी बन जाते हैं वैसे आप सब बाप-समान आकारी अव्यक्त-वतन निवासी बनो या निराकारी बाप के गुणों समान सर्व गुणों में भी मास्टर बन जाओ - इसको कहा जाता है सम्पूर्ण स्नेह का रिटर्न।

107- अभी सेवा की फाइल फाइनल करो। जैसे फाइल के हर कागज़ में ऑफीसर अपनी सही करके सम्पन्न करके आगे बढ़ाता है। तो आप सब सेवाधारी हर आत्मा पर मुक्ति व जीवनमुक्ति की साइन करो। फाइनल की स्टैम्प लगाओ तो फाइल सम्पूर्ण हो जायेगी। अन्त में सम्पूर्ण होंगे - इस संकल्प को पहले खत्म करो। अभी बने तो अन्त में भी बनेंगे, इसलिए इस अलबेलेपन की नींद से भी जग जाओ। कोई भी विशेष कमजोरी को अन्त में सम्पूर्ण करेंगे, यह कभी संकल्प में भी नहीं लाओ।

108- अभी आप बच्चों का सम्पूर्ण स्वरूप सफलता की माला लेकर आप पुरुषार्थियों के गले में डालने के लिए नज़दीक आ रहा है। इसलिए अन्तर को मिटाकर हम सो फरिश्ता का मन्त्र पक्का कर लो तो साइन्स का यन्त्र अपना काम शुरू करे, फिर हम सो फरिश्ते से, हम सो देवता बन नई दुनिया में अवतरित होंगे। ऐसे साकार बाप को फालो करो।

109- अब चारों ओर हर ब्राह्मण बाप-समान चैतन्य चित्र बन जाए, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बन जाए, संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करे और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाये तब सम्पन्नता वा सम्पूर्णता समीप आयेगी।

110- कहा जाता है – जैसा चित्र वैसा चरित्र। जैसी स्मृति वैसी स्थिति । तो सदा अपना सम्पूर्ण चित्र सामने रखो जिसमें सर्वगुण, सर्व शक्तियाँ सब समाई हुई हैं। ऐसा चित्र रखने से स्वत: ही चरित्र श्रेष्ठ होगा। मेहनत करने की जरूरत ही नहीं होगी।

111- संगमयुग बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने का युग है। तो कम्बाइन्ड रहो अर्थात् साथी बनकर रहो तो सब झमेले समाप्त हो जायेंगे। अब सम्पन्नता के प्रालब्धी बनो। अल्पकाल की प्रालब्ध को समाप्त कर सम्पूर्णता के सम्पन्नता की प्रालब्ध को अनुभव में लाओ।

112- जैसे ब्रह्मा बाप को सदा अपना फरिश्ता स्वरूप और देवपद स्वरूप दोनों ही ऐसे स्पष्ट स्मृति में रहता था जो सामने जाने वाले भी फरिश्ता रूप और भविष्य श्रीकृष्ण का रूप देखते और वर्णन करते थे। ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी – स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और सामने आने वाली आत्मायें भी व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी।

113- अब अपनी सम्पूर्ण स्टेज को स्वयं ही वरना है अर्थात् सदा उमंग-उत्साह की वरमाला पहननी है तब फिर लक्ष्मी वा नारायण को वरेंगे। अभी आप सबकी सम्पूर्ण स्टेज आपका आह्वान कर रही है। जब आप सब सम्पूर्ण स्टेज को पालेंगे तब ही सम्पूर्ण ब्रह्मा और ब्राह्मण साथ-साथ ब्रह्म घर में जायेंगे और फिर राज्य अधिकारी बनेंगे।

114- जैसे माला जब तैयार होती है तो एक के साथ एक दाना मिला हुआ होता है। चाहे 108वाँ नम्बर हो लेकिन दाना मिला हुआ तो वह भी है। तो जब आप सब सम्पूर्णता के नजदीक पहुंचेंगे तो एक दो के संस्कारों के समीप आते जायेंगे। जिसको भी देखेंगे, सभी से यह महसूसता आयेगी कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं। वैरायटी संस्कार होते भी समीप दिखाई देंगे।

115- जब आप चमकते हुए सितारे सूर्य, चन्द्रमा समान अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर स्थित होंगे तो भटकी हुई आत्मायें, ढूंढने वाली आत्मायें स्वत: ही पाने के लिए, मिलने के लिए ऐसी फास्ट गति से आयेंगी जो आप सबको सेकेण्ड में बाप द्वारा मुक्ति, जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाने की तीव्रगति से सेवा करनी पड़ेगी। उस समय सतगुरु के बच्चे बन गति और सद्गति के वरदाता का पार्ट बजाना होगा।

116- ब्रह्मा बाप एक-एक बच्चे को विशेष आत्मा, सम्पूर्ण आत्मा, सम्पन्न आत्मा, समान आत्मा देखने चाहते हैं। शिव बाप ब्रह्मा को कहते हैं धैर्य धरो। लेकिन ब्रह्मा को उमंग बहुत होता है। इसलिए वह बाप से यही रूहरिहान करते हैं कि बच्चे हाथ में हाथ दे मेरे समान बन जाएँ। ब्रह्मा बाप के साकार जीवन की आदि से लेकर विशेषता देखी – 'कब नहीं लेकिन अभी' करना है।

117- सदा एकरस जगे हुए दीपकों की निशानी सम्पूर्णता है। जैसे वर्ष बीतते ऐसे जो भी पुरानी चाल है वह बीत जाए और नया उमंग, नया संकल्प सदा रहे - तो यही सम्पूर्णता की निशानी है। अब प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है, इसलिए सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो तो आपके सम्पूर्णता की रोशनी से अज्ञान का पर्दा स्वत: ही खुल जायेगा। इसलिए रिसर्च करो। सर्च लाइट बनो।

118- अभी सम्पूर्ण बाप और सम्पूर्ण स्टेज दोनों ही आप बच्चों को बुला रहे हैं कि आओ श्रेष्ठ आत्मायें आओ, समान बच्चे आओ, समर्थ बच्चे आओ, समान बन अपने स्वीट होम में विश्रामी बनो। जैसे बापदादा विधाता, वरदाता है ऐसे आप भी सर्व आत्माओं प्रति विधाता बनो, वरदाता बनो। ''हम फरिश्ता सो देवता'', इस मंत्र को विशेष स्मृति स्वरूप बनाओ।

卐卐卐

119- सम्पूर्ण बनना अर्थात् समाधान स्वरूप बनना। जैसे ब्रह्मा बाप के सामने समस्या ले आने वाला समस्या भूल जाता था। समस्या की बातें बोलने की हिम्मत नहीं रही क्योंकि सम्पूर्ण स्थिति के आगे बचपन का खेल अनुभव करते थे, इसलिए समाप्त हो जाती थी। इसको कहते हैं समाधान स्वरूप। ऐसे आप एक-एक समाधान स्वरूप बन जाओ तो समस्याओं का आधा कल्प के लिए विदाई समारोह हो जायेगा।

120- जैसे ब्रह्मा बाप की लास्ट समय की स्थिति में ''उपराम और पर-उपकार'' यह विशेषता सदा देखी। स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा पहले बच्चे। इसको कहते हैं पर-उपकारी – यही सम्पन्नता, सम्पूर्णता की निशानी है। सम्पूर्णता की चेकिंग अपनी सम्पन्नता से कर सकते हो।

121- सम्पूर्णता माना सर्व खजानों से फुल होना। जैसे चन्द्रमा जब सम्पन्न होता है तो सम्पन्नता उसकी सम्पूर्णता की निशानी होती है। इससे और आगे नहीं बढ़ेगा, बस इतनी ही सम्पूर्णता है। ज़रा भी किनारी कम नहीं होती है, सम्पन्न होता है। तो ज्ञान, योग, धारणा और सेवा – इन सभी में सम्पन्न को ही सम्पूर्ण कहा जाता है।

122- अन्त में जब सब सम्पूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प के लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह अभी का यादगार है। तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब-कुछ भस्म करो।

123- सम्पन्न बनने के लिए एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ। अभी न चाहते भी व्यर्थ चल जाता है। व्यर्थ का तरफ कोई-कोई समय शुद्ध-श्रेष्ठ संकल्प से भारी हो जाता है। तपस्या द्वारा जब व्यर्थ की समाप्ति हो तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। समाप्ति के बिना सम्पूर्णता नहीं आ सकती।

124- बाप द्वारा वर्सा, सर्व प्राप्तियों का अर्थात् सम्पन्नता का मिलता है। इसमें सर्व शक्तियां भी आ जातीं, गुण भी आ जाते, सम्पूर्ण ज्ञान भी आ जाता है। कोई कमी नहीं है। फुल वर्सा अर्थात् सम्पन्नता, सम्पूर्णता। जब हर एक को पूरा वर्सा मिलता है तो जहाँ सर्व प्राप्तियाँ हैं वहाँ सन्तुष्टता अवश्य होगी। सन्तुष्टता ही सम्पन्नता की निशानी है।

125- आपके यादगार शास्त्रों में दिखाते हैं – शंकर ने तीसरी आँख खोली और विनाश हो गया। तो शंकर अर्थात् अशरीरी तपस्वी रूप। सदा ऊँची स्थिति और ऊँचे आसनधारी। यह तीसरी आँख अर्थात् सम्पूर्णता की आँख, सम्पन्नता की आँख। जब आप तपस्वी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति से विश्व-परिवर्तन का संकल्प करेंगे तो यह प्रकृति भी सम्पूर्ण हलचल की डांस करेगी। सम्पूर्णता की स्थिति इस तपस्या से बनानी है।

126- सर्व खज़ानों को जमा करने की विधि है कार्य में लगाना। कई बच्चे कहते हैं कि सर्व खज़ाने मेरे अन्दर बहुत समाये हुए हैं। लेकिन समाये हुए हैं अर्थात् जमा हैं तो उसकी निशानी है – स्व प्रति व औरों के प्रति समय पर काम में आयें, तब सम्पूर्णता की सिद्धि मिलेगी।

127- सम्पूर्ण बनने के लिए भावना के साथ, ज्ञान स्वरूप बनने का लक्ष्य रखो। जितनी भावना हो उतना ही ज्ञान स्वरूप भी हो। ज्ञान-युक्त भावना, स्नेह-सम्पन्न योगी आत्मा – यह दोनों का बैलेन्स सहज उड़ती कला का अनुभव कराता है। बाप समान बनना अर्थात् इन दोनों की समानता।

128- सम्पूर्ण बनने के लिए बुद्धि, वृत्ति और वाणी सदा सम्पूर्ण स्वच्छ हो। चित्त पर किसी की बुराई नोट न हो। कभी उसका वर्णन वा चिंतन न चले, जब ऐसे सूक्ष्म पापों से भी मुक्त बनो तब सम्पूर्ण बन सकेंगे।

129- सम्पन्न बनने के लिए आवश्यक है, स्व पुरुषार्थ के साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे बड़ों की दुआयें। इन दुआओं से ही पुण्य का खाता जमा होता है। इसके लिए सेवा के साथ निर्मानता और मिलनसार नेचर हो, अगेन्स्ट को भी एडजेस्ट करो तब सम्पन्नता के समीप पहुँच सकेंगे।

130- जैसे सेवा में प्रत्यक्षता होती जा रही है, विधि बदलती जा रही है। ऐसे हर एक अपने में सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करो। अभी इसकी आवश्यकता है और अवश्य सम्पन्न होनी ही है। कल्प-कल्प की निशानी आपकी सिद्ध करती है कि सफलता हुई ही पड़ी है। दृढ़ प्रतिज्ञा की भाषा है–'ऐसा' हो या 'वैसा' लेकिन मुझे 'बाप जैसा' बनना है। दूसरे ऐसे करें तो मैं अच्छा रहूँ, दूसरा सहयोग दे तो मैं सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनूँ। नहीं, मुझे बनना है।

131- मास्टर दाता बन सबको सहयोग, स्नेह, सहानुभूति देना ही लेना है। याद रहे 'देने में ही लेना है'। दृढ़ प्रतिज्ञा का आधार है – स्व को देखना, स्व को बदलना, स्वमान में रहना। किसी भी समय कोई भी परिस्थिति आ जाये लेकिन हम सदा एवररेडी रहेंगे। कल भी विनाश हो जाये तो तैयार। एवररेडी अर्थात् सम्पूर्ण।

132- जो एवररेडी होंगे वो टाइम-कान्शस नहीं होंगे। बाप के बन गये, तो सिवाए बाप के और कोई नहीं। एक बाप दूसरा न कोई – यही तैयारी चाहिए। ज़रा भी कोई आकर्षण आकर्षित नहीं करे। रॉकेट भी तब उड़ सकता है, जब धरती की आकर्षण से परे हो जाये। नहीं तो ऊपर उड़ नहीं सकता। तो चेक करो संकल्प में भी कोई आकर्षण आकर्षित तो नहीं करता है?

133- जब सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का लक्ष्य रखा है तो छोटी-छोटी बातों में घबराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ हेमर (हथौड़े) तो लगेंगे, नहीं तो मूर्ति कैसे बनेंगे! जो जितना आगे होता है उसको तूफ़ान भी सबसे ज्यादा क्रॉस करने होते हैं लेकिन वो तूफ़ान उन्हों को तूफ़ान नहीं लगता, तोहफ़ा लगता है। ये तूफ़ान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की।

134- सम्पन्न या सम्पूर्ण बनने में यदि कोई संकल्प मात्र भी रुकावट हो तो उसको अब से समाप्त करो, और जो कमज़ोरी हो उसके बजाय शक्ति धारण करो। बापदादा अब सभी बच्चों को सम्पन्न देखना चाहते हैं। बाप का प्यार है इसलिए बच्चों की कमी अच्छी नहीं लगती। इसलिए सब कम्पलेन्ट खत्म कर कम्पलीट बनो।

135- समय, प्रकृति और माया अब विदाई के लिये इन्तज़ार कर रही हैं। आप सम्पूर्णता की बधाइयाँ मनाओ तो वो विदाई लेकर जायेंगी। माया भी देखती है अभी ये तैयार नहीं हैं तो चांस लेती रहती है। तो चेक करो कि दिव्य गुणों का शृंगार सदा रहता है? ब्राह्मण स्वरूप की सर्व शक्तियाँ, फ़रिश्ते स्वरूप की डबल लाइट स्थिति और देवता स्वरूप की दातापन की निशानी और दिव्य गुणों से सम्पन्न कहाँ तक बने हैं?

136- सदा एडजेस्टमेन्ट की शक्ति को अपनाया तो बहुत सहज सम्पूर्ण बन जायेंगे क्योंकि जब तक सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में एडजेस्ट नहीं होते तब तक माया का वार होता है। एडजेस्ट होने की कला को लक्ष्य बना दिया तो सहज सम्पूर्ण बन जायेंगे क्योंकि जिसमें एडजेस्ट होने की शक्ति है उसमें सहनशक्ति, अन्तर्मुखता सब सहज आ जाते हैं।

137- जैसे बाप का संस्कार विशेष है ही विश्व-कल्याणकारी, शुभ चिन्तनधारी, शुभ भावना, शुभ कामनाधारी। यही संस्कार आप बच्चों के हों। कोई भी अशुद्धि अन्दर छिपी हुई ना हो। अगर अन्दर कोई भी अशुद्ध संस्कार हैं तो जो बनना चाहते हो, लक्ष्य रखते हो उसे प्रैक्टिकल लाने में फ़र्क पड़ जाता है।

138- आपकी लास्ट सम्पूर्ण स्टेज है - **देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव।** बापदादा बच्चों को सम्पन्न बनने का सहज साधन बताते हैं – फ़ालो फ़ादर मदर। कोई नया रास्ता नहीं ढूँढ़ना है, सिर्फ कदम पर कदम रखना है। जो भी कार्य करते हो चाहे मन्सा संकल्प करते हो, चाहे बोल बोलते हो, चाहे कर्म में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, हर कर्म करने के पहले सोचो कि मैं जो कर रहा हूँ, क्या यह ब्रह्मा बाप समान है? अगर नहीं है तो नहीं करना है। इससे अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे।

139- ब्रह्मा बाप वतन में आप सब बच्चों के सम्पूर्ण अव्यक्त फ़रिश्ते बनने का आह्वान कर रहे हैं। **''आओ बच्चे, मीठे बच्चे, जल्दी-जल्दी आओ''** ब्रह्मा बाप का यह आवाज़ सुनो, कैच करो। अपने फ़रिश्ते-पन के, सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति में तीव्रगति से आगे बढ़ने का श्रेष्ठ संकल्प करो। प्रकृति अपना कुछ भी रंग-रूप दिखाये, आप फ़रिश्ता बन, बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन प्रकृति के हर दृश्य को देखने के लिए तैयार रहो, प्रकृति की हलचल के प्रभाव से मुक्त फ़रिश्ते बनो।

140- अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश न हो। मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है क्योंकि ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए।

141- ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ऐसी जीवनमुक्त स्थिति बनाकर दिखाओ। न मन का विघ्न हो, न साथियों का विघ्न हो, न स्टूडेन्टस द्वारा कोई विघ्न हो। स्व निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न – यह तीन सर्टीफिकेट लो तब सम्पूर्णता का समारोह होगा।

142- अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज जिसमें सर्व शक्तियों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर नॉलेजफुल की स्थिति प्रैक्टिकल रूप में हो। ऐसी सम्पन्न आत्मा सेकेण्ड में जिस स्थिति में स्थित होने का डायरेक्शन मिले, उसी समय स्वयं को स्थित कर लेगी। जो डायरेक्शन मिले उसी प्रमाण, उसी घड़ी उस स्थिति में स्थित हो जाना – इस साधन को, प्रैक्टिस को अनुभव में लाना अर्थात् सम्पूर्ण बनना।

143- सम्पूर्णता ही समीपता का आधार है। जब आप बच्चे सम्पूर्ण बनेंगे तब अन्तिम समय समीप आयेग3ा इसलिए याद रखो कि – सम्पूर्णता द्वारा समाप्ति के समय को समीप लाने वाली और समीप रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं। जो बाप समान होंगे वो ही समीप रहेंगे। इसी स्मृति के समर्थी से सदा आगे बढ़ते चलो।

144- सम्पूर्णमूर्त वा सफलतामूर्त बनने के लिए जितना ही लवफुल उतना ही लॉफुल बनना है। स्वयं अपने प्रति लॉफुल बनने से दूसरों के प्रति भी लॉफुल बन सकेंगे। अगर स्वयं कोई लॉ को ब्रेक करता है तो वह दूसरों के ऊपर लॉ चला नहीं सकता। तो चेक करो कि सवेरे से लेकर रात तक किसी भी प्रकार के लॉ को ब्रेक तो नहीं किया? जो लॉ मेकर हैं वह लॉ ब्रेकर नहीं बन सकते।

145- जो सम्पूर्ण स्टेज के अति नजदीक होंगे उनके संकल्प, बोल और कर्म में एक नशा रहेगा कि जो भी कुछ कर रहा हूँ उसमें सम्पूर्ण सफलता हुई ही पड़ी है। होनी है नहीं, हुई ही पड़ी है। संकल्प में भी यह नशा होगा कि मेरे संकल्प की सिद्धि हुई ही पड़ी है। सफलता मेरे पीछे-पीछे आने वाली है। ऐसा नशा, संकल्प, बोल और कर्म में हो तब समझो सम्पन्नता के अति समीप हैं।

146- समय प्रमाण जितनी सम्पूर्णता भरती जायेगी उतनी ही सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता भी बढ़ती जायेगी। कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी अनुभव करेगी कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं की मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की, रहमदिल की शुभ भावना सदा नज़र आती है। तो जब सर्व आत्माओं द्वारा ऐसा सन्तुष्टमणि का सर्टिफिकेट प्राप्त हो तब कहेंगे कि यह सम्पूर्णता के समीप है।

147- सम्पूर्ण स्टेज समीप है तो हर परिस्थिति वा परीक्षा में स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। त्रिकालदर्शीपन के स्मृति स्वरूप होने के कारण हर कर्म के तीनों कालों को जानने वाले हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म वा सुकर्म बनायेंगे। विकर्म का खाता समाप्त हुआ अनुभव होगा। पुराने स्वभाव संस्कार से उपराम अनुभव करेंगे।

148- बालक सो मालिक अर्थात् बाप समान सम्पन्न। मालिकपन की विशेषता – जितना ही मालिक उतना ही विश्व-सेवाधारी के संस्कार सदा इमर्ज रूप में होंगे। जितना मालिकपन का नशा उतना ही विश्व-सेवाधारी का नशा – जब दोनों की समानता हो तब कहेंगे बाप समान।

149- बापदादा की सभी बच्चों प्रति यही आश है कि अब सम्पूर्णता के सुहावने श्रेष्ठ समय को समीप लाओ। बापदादा अब यही सेरीमनी देखने चाहते हैं कि हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे। जब हर ब्राह्मण के अन्दर यह झण्डा लहरायेगा तब विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जायेगा। फिर सब यही गीत गायेंगे कि शिव के साथ शक्तियां और पाण्डव प्रत्यक्ष हो गये।

150- सम्पन्न बनने के लिए संगमयुग की जीवनमुक्त स्टेज का अनुभव करो। कोई भी विघ्न, परिस्थितियां, साधनों की आकर्षण सामना करे, बॉडी-कान्शस का मैं और मेरापन उत्पन्न हो तो इसके प्रभाव से मुक्त रहना।